अध्याय 5: उषा

विषय-सूची

2 प्रश्नावली · 3 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1	कविता के साथ	2 प्रश्न
प्रश्नावली 5.2	आपसदारी	1 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1 — कविता के साथ

प्रश्न 1

कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है?

हल

शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' में प्रयुक्त उपमान मुख्यतः ग्रामीण जीवन और ग्रामीण परिवेश से लिए गए हैं, जो इसे गाँव की सुबह का जीवंत एवं गतिशील शब्दचित्र बनाते हैं।

पहला उपमान — 'राख से लीपा हुआ चौका': भोर का नभ राख से लीपे हुए चौके जैसा है जो अभी गीला पड़ा है। चौका लीपना ग्रामीण घर-आँगन की दैनिक क्रिया है, जो भोर की ताज़गी और नमी को बखूबी व्यक्त करती है।

दूसरा उपमान — 'बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो': सिल (पत्थर की चक्की) ग्रामीण रसोई की परिचित वस्तु है। उस पर लाल केसर लगने से जो रंग उभरता है, वैसा ही रंग उषाकाल के आकाश में फैलता है।

तीसरा उपमान — 'स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने': स्लेट और खड़िया चाक गाँव के स्कूल की पहचान है। इस उपमान से आकाश के बदलते रंगों की सजीव कल्पना की गई है।

चौथा उपमान — 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो': यह उपमान गाँव की किसी स्त्री के जल में झिलमिलाती छवि से है, जो उषाकाल की आसमानी नीली आभा को मानवीय सौंदर्य से जोड़ता है।

इन सभी उपमानों में गति है — चौका गीला है, सिल पर केसर धुल रही है, स्लेट पर चाक मली जा रही है, देह जल में हिल रही है। यह गतिशीलता ही उषा के क्षण-प्रतिक्षण बदलते रूप को दर्शाती है।

इस प्रकार ग्रामीण जीवन के ये परिचित उपमान कविता को गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र बनाते हैं।

उत्तर: उषा कविता में 'राख से लीपा हुआ चौका', 'बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से धुल गई हो', 'स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दी हो' और 'नील जल में गौर झिलमिल देह हिल रही हो' — ये उपमान ग्रामीण जीवन से लिए गए हैं और इनमें निरंतर गति है, जो उषाकाल के पल-पल बदलते आकाश को गाँव की सुबह के जीवंत शब्दचित्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न 2

भोर का नभ राख से लीपा हुआ चौका (अभी गीला पड़ा है) नयी कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है? समझाइए।

हल

इन पंक्तियों में कवि ने भोर के नभ की तुलना 'राख से लीपे हुए चौके' से की है।
कोष्ठक में आई पंक्ति '(अभी गीला पड़ा है)' एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
कोष्ठक से पैदा विशेष अर्थ — ताज़गी और क्षणभंगुरता: कोष्ठक में 'अभी गीला पड़ा है' कहकर कवि यह संकेत देता है कि यह दृश्य अभी-अभी का है — उषा का यह रूप क्षणिक है, अभी-अभी बना है और शीघ्र बदल जाएगा।
कोष्ठक एक 'फुसफुसाहट' या 'मन की बात' जैसा प्रभाव देता है — जैसे कवि पाठक को धीरे से एक महत्त्वपूर्ण विवरण बता रहा हो जो मुख्य वाक्य में नहीं आ सका।
ताज़े लीपे हुए चौके की राख जब गीली होती है, तो उसका रंग ठीक वैसा ही होता है जैसा भोर के आसमान का — एक धुंधला, हल्का, नमी भरा स्लेटी रंग। 'अभी गीला' कहकर यह रंग-साम्य और भी सटीक बन जाता है।
इससे यह भी ध्वनित होता है कि यह दृश्य स्थायी नहीं है — जैसे गीला चौका सूखकर रंग बदल लेता है, वैसे ही उषा की यह नीली आभा भी सूर्योदय के साथ मिट जाएगी।
नयी कविता में कोष्ठक का यह प्रयोग कविता की संरचना में एक नाटकीय ठहराव और अतिरिक्त अर्थ-स्तर जोड़ता है जो सामान्य वाक्य में संभव नहीं होता।

उत्तर: कोष्ठक में '(अभी गीला पड़ा है)' कहकर कवि ने उषा की क्षणभंगुरता और ताज़गी का संकेत दिया है। यह पंक्ति एक फुसफुसाहट की तरह पाठक को बताती है कि भोर का यह राख-रंगी नभ अभी-अभी बना है और शीघ्र बदल जाएगा — ठीक वैसे जैसे गीला लीपा चौका सूखकर रंग बदल लेता है। कोष्ठक ने उपमान को और अधिक सटीक और अर्थवान बनाया है।

प्रश्नावली 5.2 — आपसदारी

प्रश्न 1

सूर्योदय का वर्णन लगभग सभी बड़े कवियों ने किया है। प्रसाद की कविता 'बीती विभावरी जाग री' और अज्ञेय की 'बावरा अहेरी' की पंक्तियाँ पाठ में दी गई हैं। 'उषा' कविता के समानांतर इन कविताओं को पढ़ते हुए निम्नलिखित बिंदुओं पर तीनों कविताओं का विश्लेषण कीजिए और यह भी बताइए कि कौन-सी कविता आपको ज्यादा अच्छी लगी और क्यों? — उपमान, शब्दचयन, परिवेश

हल

तीनों कविताओं का तुलनात्मक विश्लेषण:

उपमान की दृष्टि से:
शमशेर की 'उषा' — उपमान ग्रामीण और घरेलू जीवन से हैं: राख से लीपा चौका, काली सिल पर केसर, स्लेट पर खड़िया चाक, नील जल में गौर देह। ये उपमान नए, प्रयोगवादी और अत्यंत मौलिक हैं।
प्रसाद की 'बीती विभावरी जाग री' — उपमान शास्त्रीय और प्रकृति-आधारित हैं: अंबर पनघट, तारा-घट, लतिका, मधु-मुकुल, गागरी। ये छायावादी उपमान सौंदर्य और लालित्य से भरे हैं।
अज्ञेय की 'बावरा अहेरी' — उपमान आधुनिक नगरीय जीवन से हैं: उड़ने जहाज़, तारघर, मंदिर-शिखर, कचरा जलानेवाली चिमनियाँ। ये उपमान प्रयोगवादी किंतु शहरी हैं।

शब्दचयन की दृष्टि से:
शमशेर की 'उषा' — शब्द सरल, ठोस और बिंबात्मक हैं। संज्ञाएँ कम, क्रियाएँ और विशेषण सटीक हैं। उर्दू और हिंदी का मिश्रण है।
प्रसाद की 'बीती विभावरी जाग री' — शब्द संस्कृतनिष्ठ, संगीतात्मक और भावपूर्ण हैं। 'पनघट', 'किसलय', 'अलकों', 'मलयज', 'विहाग' जैसे शब्द छायावादी सौंदर्य बोध से भरे हैं।
अज्ञेय की 'बावरा अहेरी' — शब्द विविध और जटिल हैं। 'कनियाँ', 'परेवे', 'डैनों', 'धुस्सों', 'पुष्पिताग्र', 'तन्वि' जैसे शब्द नई कविता की प्रयोगधर्मिता को दर्शाते हैं।

परिवेश की दृष्टि से:
शमशेर की 'उषा' — परिवेश ग्रामीण है। चौका, सिल, स्लेट, खड़िया — ये सब गाँव के घर और स्कूल की वस्तुएँ हैं। कविता का परिवेश गाँव की भोर का शांत, ताज़ा वातावरण है।
प्रसाद की 'बीती विभावरी जाग री' — परिवेश प्रकृति का काव्यशास्त्रीय संसार है — पनघट, लतिका, पुष्प। यह एक रोमांटिक, काल्पनिक प्रकृति-परिवेश है जिसमें एक प्रेमिका को जगाया जा रहा है।
अज्ञेय की 'बावरा अहेरी' — परिवेश नगरीय और आधुनिक है। मंदिर-शिखर और तारघर दोनों हैं — पुराना और नया मिला-जुला शहरी दृश्य।

निष्कर्ष: शमशेर की 'उषा' अपनी मौलिकता, ग्रामीण बिंबों की ताज़गी और भोर के क्षण-प्रतिक्षण बदलते चित्रण की गतिशीलता के कारण सबसे प्रभावशाली है। इसके उपमान प्रयोगवादी होते हुए भी पाठक के अनुभव-संसार के बेहद निकट हैं।

उत्तर: उपमान: शमशेर के उपमान ग्रामीण (चौका, सिल, स्लेट), प्रसाद के शास्त्रीय-प्रकृति (पनघट, गागरी, लतिका) और अज्ञेय के नगरीय-आधुनिक (चिमनी, तारघर, जहाज़) हैं। शब्दचयन: शमशेर सरल-बिंबात्मक, प्रसाद संगीतात्मक-संस्कृतनिष्ठ, अज्ञेय विविध-जटिल हैं। परिवेश: शमशेर का ग्रामीण, प्रसाद का काल्पनिक-रोमांटिक और अज्ञेय का नगरीय है। 'उषा' के ग्रामीण उपमान अपनी मौलिकता और गतिशीलता के कारण भोर का सबसे सजीव चित्रण करते हैं।